समकालीन साहित्य में संत काव्य की प्रासंगिता

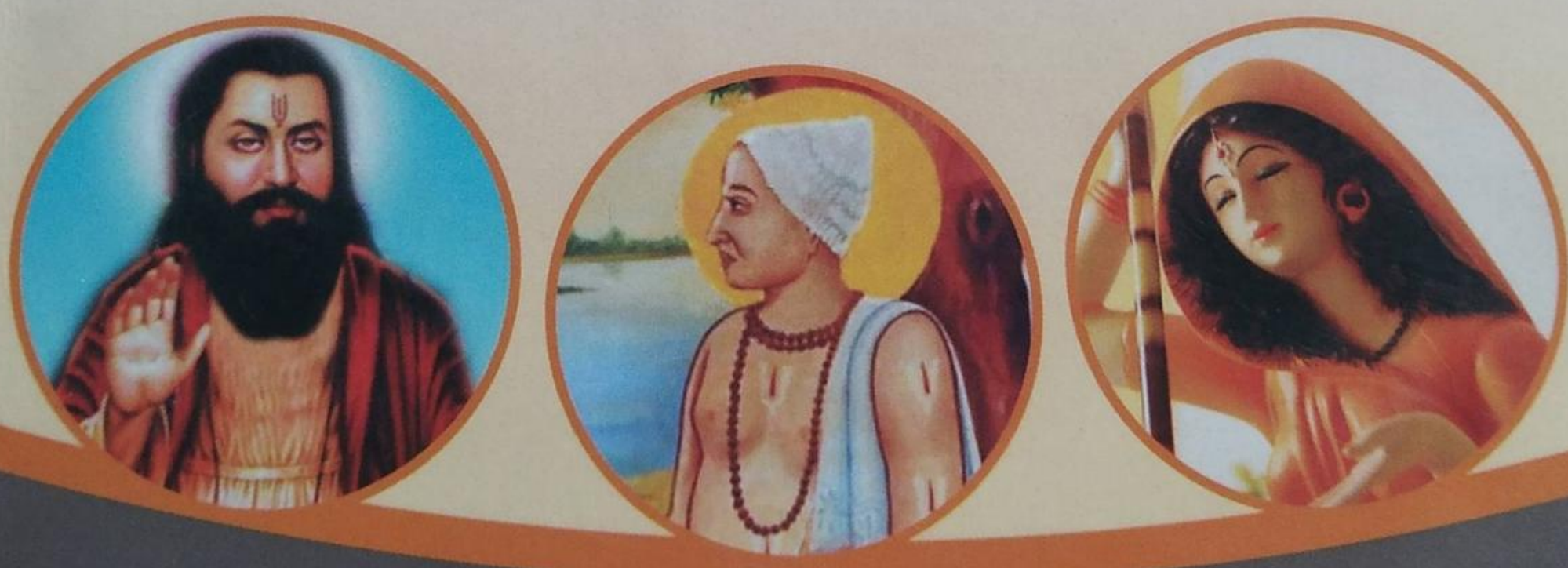

संपादक
डॉ. बसुन्धरा उपाध्याय

Scanned by TapScanner

डॉ. बसुन्धरा उपाध्याय

जन्म : सम्भल, उत्तर प्रदेश

शिक्षा : एम.ए. (हिंदी), पी-एच.डी.

प्रकाशित पुस्तक - जय शंकर प्रसाद के नाटकों में राजनीतिक दर्शन

संपादित पुस्तक : महिला विमर्श : समय से संवाद • हिंदी साहित्य और सिनेमा विमर्श • हिंदी साहित्य और प्रवासी विमर्श • वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हिंदी की सार्थकता • आधुनिक हिंदी साहित्य के विविध रूप

शोध-पत्र-40 • लेख-4 • अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठि-10, राष्ट्रीय संगोष्ठि-30 एवं 7 कार्यशाला

सम्मान : भाषा सहोदरी हिंदी सम्मान, जनवरी 2018 • एक्सिलेन्स प्रशस्ति पत्र एवं सम्मान हिमालय और हिंदुस्तान, ऋषिकेश, मार्च 2018 • प्रशस्ति पत्र मानवाधिकार सुरक्षा समिति, राजस्थान, मार्च 2018 • साहित्य प्रतिभा सम्मान, वीर भाषा साहित्य पीठ, मुरादाबाद, अप्रैल 2018 • अचीवमेन्ट अवार्ड हिमालय और हिंदुस्तान, ऋषिकेश, उत्तराखण्ड • सारस्वत सम्मान, वृन्दावन शोध संस्थान, मथुरा, सितम्बर 2018 • श्रमजीवी पत्रकार सम्मान, ऋषिकेश, उत्तराखण्ड, जुलाई 2018

रूचि : सृजनात्मक लेखन एवं आलोचना।

सम्प्रति : असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, एल.एस.एम. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड।

शिक्षण अनुभव : 12 वर्ष

E-mail : basu1577@gmail.com
Mo.: 9410700853

साहित्य संचय

ISO 9001 : 2015 प्रमाणित प्रकाशन

हम करते हैं समय से संवाद

www.sahityasanchay.com
e-mail : sahityasanchay@gmail.com
Mob. : 9871418244, 9136175560

₹ 150

ISBN : 978-93-88011-65-5

9 789388 011655

समकालीन साहित्य
में
संत काव्य की प्रासंगिकता

संपादक
डॉ. बसुंधरा उपाध्याय

साहित्य संचय
ISO 9001 : 2015 प्रमाणित प्रकाशन
हम करते हैं समय से संवाद

Scanned by TapScanner

© संपादक

ISBN : 978-93-88011-65-5

प्रकाशक

साहित्य संचय

बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता,
सोनिया विहार, दिल्ली-110090
फोन नं. : 09871418244, 09136175560
ई-मेल - sahityasanchay@gmail.com
वेबसाइट - www.sahityasanchay.com

ब्रांच ऑफिस

ग्राम : बहुरार, पोस्ट : ददरी
थाना : नानपुर, जिला : सीतामढ़ी
पटना (बिहार)

नेपाल ऑफिस

राम निकुंज, पुतलीसड़क
काठमांडौ, नेपाल-44600
फोन नं. : 00977 9841205824

प्रथम संस्करण : 2019
कवर डिजाइन : प्रदीप कुमार

मूल्य : ₹ 150/- (भारत, नेपाल)
मूल्य : $ 7/- (अन्य देश)

SAMKALEEN SAHITYA MEIN SANT KAVYA KI PRASANGIKTA
EDITED by Dr. Basundhara Upadyay

साहित्य संचय, बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता, सोनिया विहार, दिल्ली-110090 से **मनोज कुमार** द्वारा प्रकाशित तथा **श्रीबालाजी ऑफसेट,** दिल्ली द्वारा मुद्रित।

Scanned by TapScanner

अनुक्रम

भूमिका 5

1. समकालीन साहित्य व संत-समाज 11
निशा

2. समकालीन साहित्य में समाजिक दशाओं का वर्णन : भक्ति काल से अब तक 19
कृष्णलाल

3. समकालीन समाज में संत कबीरदास के साहित्य की प्रासंगिकता 24
अंजु बाला

4. समकालीन साहित्य में संत-समाज 32
मीनाक्षी

5. समकालीन साहित्य में संत-साहित्य की प्रासंगिकता 37
डॉ. धर्मेंद्र कुमार

6. समकालीन साहित्य में संत-समाज 43
रेखा कुमारी

7. समकालीन साहित्य में संतों का योगदान 50
रोशनी देवी

8. समकालीन संत-साहित्य और आज का जीवन 55
प्रा.डॉ. पवन नागनाथराव एमेकर

9. समकालीन समाज और कबीर की प्रासंगिकता 59
मीना कुमारी

10. भक्तिकालीन संत-साहित्य और सामाजिक मूल्य 65
डॉ. विलास अंबादास साळुंके

11. प्रगतिशीलता और सूरदास का काव्य 70
डॉ. कंचन शर्मा

12. भक्त कवि गोस्वामी तुलसीदास 78
डॉ. प्रतिभा चौहान

13. संत रविदास जी की सामाजिक चेतना 85
प्यारा सिंह

Scanned by TapScanner

14. हिंदी साहित्य में संत काव्य परंपरा और उनके कवि — 89
सानिया गुप्ता
15. संतकवि सुंदरदास के काव्य में यात्रा-वृत्तांत — 93
डॉ. रामचंद
16. समकालीन साहित्य में संत समाज — 100
अनिता पांडेय
17. जायसीकृत पदमावत में छन्द विधान-एक दृष्टि — 113
डॉ. बसुन्धरा उपाध्याय
18. 21वीं सदी की हिंदी कहानियों में वृद्ध-विमर्श — 119
सुप्रिया प्रसाद
19. समकालीन जीवन और संत-साहित्य की प्रासंगिकता — 129
डॉ. मीना
20. समकालीन साहित्य में संत-समाज — 135
रजनी देवी
21. कबीर के काव्य में समाज — 141
अनामिका रोहिल्ला
22. भक्तिकाल के संदर्भ में आचार्य विश्वनाथप्रसाद मिश्र की लोकवादी इतिहास-दृष्टि — 145
अमृत कुमार
23. संत नामदेव और वर्तमान समाज — 151
जगदाले अप्पासाहेब गोरक्ष

Scanned by TapScanner

संत नामदेव और वर्तमान समाज

जगदाले अप्पासाहेब गोरक्ष
शोधार्थी, हिंदी एवं भारतीय भाषा विभाग
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215
jagadaleappasaheb@gmail.com

हिंदी साहित्य के मध्यकाल में संत नामदेव का स्थान अग्रणिय है उन्हें हिंदी साहित्य के इतिहासकार डॉ. रामकुमार वर्मा एवं गणपतिचंद्र गुप्त ने संतकाव्यधारा के प्रथम कवि माना है। संत नामदेव की जन्मभूमि भले ही महाराष्ट्र रही हो परंतु कर्मभूमि पंजाब के नाम से पहचानी जाती है। संत नामदेव की मराठी भाषा में काव्यरचना 'श्रीनामदेवगाथा' के नाम से महाराष्ट्र शासन ने सन् 1970 में प्रकाशित किया। उनके अभंगों में आध्यात्मिकता, बाह्यआंडबर, पाखंड, नीति, भक्ति, समाजहित तथा उपदेषपरक अभंग में कलियुग का दर्षन होता है। संत नामदेव के काव्य के परिप्रेक्ष्य में मराठी साहित्य के विद्ववान प्रा. वासुदेव बलवंत पटवर्धन का कथन है- "नामदेव के काव्य में प्रकाश का भावमय अनुभव होता है, वह विषय-वासना में लिप्त मनुष्य का हृदय परिवर्तन करता है, उसमें करुणा, श्रद्धा, भक्ति का समन्वय हुआ है। मनुष्य का आत्मा पर प्रेम है, हृदय ने हृदय को किया संगीतमय निवेदन है उसका स्पर्श या जागृति आते ही प्रक्षुब्ध होनेवाले भावातुर हृदय के उदगार है।"[1] प्रस्तुत कथन संत नामदेव के काव्य की महानता है कि वह कोई मनुष्य विषय-वासना में लिप्त है उसका हृदय परिवर्तन किए बिना नहीं रहता है। उसके साथ ही पाठक काव्य पढ़ते समय किसी विषय-वासना के विकार को उत्तेजित होने नहीं देता है बल्कि हृदय को सद्कार्य करने के लिए जागृत करता है।

हिंदी का संत-साहित्य नामदेव के काव्य से प्रेरित होना सिद्ध है क्योंकी संत कबीर, नानक, रैदास, भिखा आदि का समय नामदेवकाल के अनन्तर पड़ता है। संत नामदेव के कार्य कृर्तृत्व के बारे में कबीरदास का मत स्पष्ट शब्दों में व्यक्त किया है-" कलि जागै नामा जै देव।"[2] उक्त पंक्ति से स्पष्ट है कि कलियुग का वर्णन

Scanned by TapScanner

निरंतर जागृत दृष्टि रखकर नामदेव एवं जयदेव इन दो भक्तकवियों ने ईश्वर साधना से काव्य रचना की है। महाराष्ट्र एवं उत्तर भारत में सव सामान्य जनता ने नामदेव को लोककवि कहकर उनके चमत्कार कथा श्रद्धापूर्वक जतन किया है। उनका कबीरदास की विचार प्रणाली पर स्पष्ट प्रभाव है। उत्तर भारत की संतपरंपरा के इतिहास में रामानंद का व्यक्तित्व प्रभावी है, वैसे ही संत नामदेव की संतपरंपरा में व्यक्तित्व अधिक सुस्पष्ट तथा प्रभावशाली लगता है। हिंदी पदावली में उन समग्र मराठी संतवाणी की अपेक्षा अभूतपूर्व है।

महाराष्ट्र के 'वारकरी संप्रदाय' के दार्शनिक व्यापक सामाजिक तत्त्वों का प्रस्फुटन किया है। उनका व्यक्तित्व इतना उदात्त प्रेम था, अंतः करण मूलतः प्रेमल तथा भक्तिप्रवण था। 13 वे 'षतक में संत नामदेव ने वारकरी संप्रदाय की विचारधारा उत्तर भारत में भागवत धर्म का प्रचार-प्रसार से जनता में भक्ति की ज्योत लगाई वही आगे जागशति का माध्यम बनी। उन्होंने अन्य प्रांत में जाकर अभूतपूर्व कार्य किया, जिससे नामदेव की भक्ति ही ज्ञाननिष्ठा तथा अपूर्व व्यक्तिमत्व कहा जाएगा।

नाचू कीर्तनाचे रंगी। ज्ञानदीप लावू जगी।।[3]

प्रस्तुत पंक्तियों में ईश्वर के भक्ति के कीर्तन-भजन में तल्लीन होकर नांच-गाकर लोगों के घर-घर में ज्ञान का दीपक लगाया है। उसमें सिख धर्म की और भक्तिप्रधान सांस्कृतिक जागरण की फसल इतनी लहलहराई कि आपन-सा अधिक लगता है। संत नामदेव ने कलियुग में मानव धर्म का यर्थाथ वर्णन करते हुए कहॉ है-

"ऐका कलियुगाचा धर्म। पुत्र सांगे पितयास काम।
ब्राह्मण त्यजिती ब्रह्मकर्म। ऐसें वर्तमान मांडलें।।
माया बहिणी दवडिती। स्त्री आपुली आणविती।
ऐका ऐका नवल गती। अगा श्रीपती परियेसी।।
भार्या न करिती पतिची सेवा। नाहीं कवणा धर्माचा हेवा।
वर्ततसे पापाचा ठेवा। अगा केषवा परियेसी।।
अरे वैराग्याचा घराचारू। आणि संन्यासा मोह थोरू।
संता बहुत अहंकार। रूसणें न लगे कोणसी।।
जाला कलिचा प्रवेषु। तुम्हाँ नामाचा विष्वासु।
हृदयी हशिकेषु। विश्णुदास नामा म्हणे।।"[4]

उक्त पंक्तियों में कलियुग के धर्म का यथार्थ वर्णन किया है कि वंदनीय पिता को बेटा मेहनत करने के लिए आज्ञा करता है। ब्राह्मण अपना बखान का कर्म त्याग देंगे ऐसे स्थिति निर्माण हो जाएगी। जब लड़का शादी की बात बिना अपने

Scanned by TapScanner

माता-पिता को बताये ही तय कर लेगा और अपनी पत्नी की बातों का पालन करेंगा। घर में पत्नी अपने पति की मनभाव से सेवा नहीं करेगी। समाज में कोई भी स्वधर्म का पालन न होने के कारण पाप में वृद्धि ओर होगी। संन्यासी लोगों में अहंकार और मोह तथा लोभ की प्रवृत्ति अग्रसर रहेगी। इसलिए हमें अपने जीवन निर्वाह में ईश्वर नाम कर्तव्यनुरूप पालन करके उचित मार्ग का अनुसरण करना होगा। कलियुग में पति के अधीन पत्नी को स्थान प्राप्त होगा और माता-पिता की अवस्था दैनंनीय या किसी वृद्धआश्रम में जीवन व्यथीथ कर लेगें। संत नामदेव का पद है-

ऐसा कलियुगीचा आचार। क्रियाभ्रश्ट्र जाले नर।।
मंचकावरी बैसे राणी। माता वाहतसे पाणी।।
स्त्रियेसी अलंकार भूशण। माता वळितसे षेण।।
स्त्रियेसी पाटावाची साडी। माता नेसे चिंध्या लुगडी।।
सासुसासङ्गा योग्य मान। मायबापा न घाली अन्न।।
साली सासवा आवडती। बहिण भावा तोंडी माती।।
स्त्रियेसी एकांत गोडी। मातेसी म्हणे रांड वेडी।।
म्हणे विष्णुदास नामा। ऐसा कलियुगींचा महिमा।।[5]

प्रस्तुत पंक्ति में कुछ स्त्री-पुरूश अधर्म का जीवन ज्ञापन करेंगे, यही कलियुग का आचार धर्म होगा। घर की बहू अपने मर्जी का जीवन जी लेगी और परिवार का काम बूढी मॉ के हिस्से ही होगा। इस कलियुग पैसो के तथा स्वार्थप्रवृत्ति चलते ही घर व रिष्तेदार में मानवीयता तथा प्रेम खत्म हो रहा है।

दस बैरागनि मोहि बसि कीनी पंचहु का मिटनावऊ।।
सतरी दोई भरे आम्रीतसरी बिखू कऊ मोरी कढावऊ
पाछै बहुरि न आवनु पावऊ।।
अम्रीतबाणी घट ते ऊचरऊ आतमकऊ समझावऊ।।
बजर कुठारु मोहि है छिना करी मिनती लगि पावऊ।।
संतनकु हम उलटे सेवक भगतन ते डर पावऊ।।
इह संसाराते तबही छुतऊ जऊ माइआ नह लपटावऊ।।
माइआ नामु गरभ जोनिका, तिन्ह तजि हरसनु पावऊ।।[6]
इतुकारी भगती करही जो जन तिन भऊ सगल चुकाइये।।
कहत नामदेऊ बाहरी किआ भरमहु इह संजम हरी पाइये।।[7]

उक्त पंक्ति में संत नामदेव ने मनुष्य के पंच विकार के संयम रहने से मनुष्य की बाणी से अमृत का स्वर ही निकालता है। आज के इस विषय वासना के अधीन होकर मनुष्य न जाने किस तरह से पापाचार व घिनोना कृत्य कर बैठता है,

Scanned by TapScanner

उसमें सामान्य के साथ शुशिक्षित स्त्री-पुरुष की संख्या दिखाई देती है। अपने जीवन का योग्य समतोल रखने के लिए भक्ति, नाम ही उसके साधन प्रमुख है परंतु वे अन्तरिक होने चाहिए न कि बाह्यआडंबर व दिखावा परक नहीं। इस तरह के विषय वासना की बात संत नामदेव के समकालीन महिला संत कान्होंपात्रा ने पौराणिक दशष्य का हवाला देते हुए व्यक्त किया है -

विषयाचे संगती। नाश पावले निश्चिति।।
भगे पडली इंद्राला। भस्मासुर भस्म झाला।।[8]

प्रस्तुत पंक्तियों में बताया है कि मनुष्य को विषय-वासना के अधीन नहीं रहना चाहिए, जिससे उसकी अधोगति सुनिश्चित है। क्योंकि इन्द्र को छिद्र पड़े थे और भस्मासुर भस्म हुआ था। इंद्रिय का संमतोल टूटने से भयावह घटना समाज में घटित होती है, जिसका परिणाम संत ज्ञानेश्वर माऊली ने दिया है "कामा तूरा भय ना लाज"[9] उक्त पंक्ति से स्पष्ट है कि कामातुर मनुष्य को लाज, शर्म, उम्र का बंधन नहीं होता है, उसके सामने क्या है वह स्त्री, लड़की कौन है इसका भान नहीं होता है। किसी घटना बार-बार प्रवुत्त करने के लिए लोभ होता है और लोभ पूर्ण न होने क्रोध बढ़ने से मनुष्य अपराध की ओर बढ़ता है, जिसकी संख्या अनपढ़ व सुशिक्षित लगभग समान ही है, यह बात ध्यान देना आवश्यक है। इसलिए संत ने मनुष्य जीवन को नैसर्गिक प्रेरणा का महत्ता एवं मूल्य को गंभीरता को जाना और विकार को शत्रु मानकर प्रारास्त कर लिया। इंद्रिय पर समतोल रखने का उचित विचार संत ने समाज में प्रसारित किया है। समाज में एक तरफ गरीब-धनवान इन दो वर्गो का संघर्ष हमेशा से रहा है। उस मतभेद को देखकर संत नामदेव का मन बहुत उदिग्न हो जाता हैं

"एक बैसती अश्वावरी। एक चालती चरणचाली।।
एक जेविता मिष्ठान्ने। एक न मिले अन्न।।" [10] इन उदा. से हम ज्ञात होता है कि नामदेव का काव्य आज कितने वर्शो के बाद ही प्रासंगिक लगता है। मनुष्य अपने समय व सत्ता में कर्म करता रहता है जिससे कहीं बार गलत भी होता है, उसका प्रायश्चित करने के लिए नदी, सरोवर, सत्संग में फिरता है। इस पाप-पुण्य के संदर्भ में संत नामदेव ने कहा है-

"सहज अवलि घुंडी मणि गाड़ी चालती। पीछे तिनका लैकरी हाँकती।।
जैसे ढनकत धुठि टी हाँकती। सरी धोवन चाली लाडुली।।
धोबी धोवै विरह बिराता। हरिचरन मेरा मनु राता।।
भणति नामदेउ रमि रहीं। अपने भगतपर करि दइआ।।"[11]

संत वाग्ड्मय से मानवी जीवन को भौतिक दृष्टि से मार्गदर्शन मिलता है। त की नैतिक भूमिका उनके सांसारिक उपदेश विश्व को व्यापक मूलभूत सामार्थ्य

Scanned by TapScanner

अत्यंत महत्त्व का है। आज का समय भले ही बदल गया हो लेकिन संत का तत्त्वज्ञान किसी न किसी रुप में मनुष्य के विचार में दिखाई देता है इसलिए समाज में कुछ वर्ग अच्छा है। समाज को तारनेवाली एकमेव साधन भक्ति ही है परंतु वह बाह्य न होकर आंतरिक होनी चाहिए। भक्ति, नाम से मनुष्य का विकार जाकर आत्मा शुद्ध होता है और मांसन पटल पर सत विचार प्रवृत्तित होते हैं। यह कार्य की सीमा किसी एक प्रांत तक सीमित नहीं रही है बल्कि पर प्रांत पंजाब, राजस्थान, गुजरात आदि में कार्य का प्रवाह आबादीत रहा है। मनुश्य के विकारों को योग्य दिषा की ओर प्रसारित किया जा सकता है। संत नामदेव ने कलियुग के वर्णन करते हुए नामस्मरण से मोक्ष की प्राप्ती होती है, इसका पुरस्कार वारकरी पंथ के सभी संत ने करवाया है-

"नामाविण साधन नाही या कलियुगी। व्यर्थ श्रम भोगी पाहता मते।।" [12]

प्रस्तुत पंक्ति का आशय है कि कलियुग में पहले की अपेक्षा लोगों का मानस पटल की वैचारिक छवि में बहुत हद्द तक बदलाव आया है। मनुष्य रात-दिन श्रम कराकर भी उसका जीवन में सुख-संतोश न होकर लोभ ओर बढ़ा रहा है, इसका प्रमुख साधन ही नाम है। संत नामदेव की लोकाभिमुख वृत्ति तथा लोकसंग्रह करने की एकरुपता ही व्यक्तित्व की महत्ता को व्यक्त करता है। उसके साथ ही अनुभवसंपन्नता, आचरण, शिक्षा, कर्तव्यनिष्ठा को सामाजिक निमत्ता को पोषक थी। संत नामदेव ने कहा था "देव पत्थर में न होकर मनुष्य के हृदय में हैं, वह सर्वव्यापी है, व्रतवैकल्यै, मनौती, कर्मठता को वाव देनेवाला सच्चा धर्म नहीं है।"[13] संत नामदेव को सामान्यजन का आत्मोंद्धार करने की चिंता थी परंतु समाज बाह्य कारण को सच मानकर उसका गुणगान करता आया है। इसलिए अंधश्रदधा विकृत विधी को ओर वाव मिला। आज के वर्तमान समाज में जातिवाद दूसरे रूप में उभरकर आया लोग सिर्फ सुशिक्षित होने का दिखावा कर रहे हैं परंतु दिमाग में वही पुरानी सोच पालकर सत्ता के कर्ता बन बैठे हैं। इसी के कारण संत काव्य की जरूरत समाज को है। संत के तत्वज्ञान की किर्ती का आधार खत्म नहीं होगा जब तक चंद्र-सूर्य है। हम भले ही कितनी भी उन्नति कर ले परंतु भक्ति ही शांति, सुख, समाधान दे सकती है।

इसलिए आज के समय में संत नामदेव के काव्य की बहुत ही आवश्यकता है कारण लोगों में आपसी द्वेष, घृणा की प्रवृत्ति बढ रही है। संत नामदेव का काव्य विश्व में एकता प्रतिपादित करता है उनके जैसे महान विचार मानसपटल में निर्माण होने में नामदेव का परिवार, काव्य ज्ञानेश्वर, वीसोबा, ज्ञान भक्ति, समन्वय, जातियता की एकता आदि काव्य वैशिष्ट्य साक्ष देता है। संत ज्ञानदेव-नामदेव का कालखंड ही वारकरी पंथ का सुवर्णकाल है। संत नामदेव ने ग्रंथ के ज्ञान के बजाए

Scanned by TapScanner

नाम ही सहज प्राप्त होता है, उस भर दिया-

न लगती कथा व्युत्पत्ति उलथा। वाड़गया चलथा ग्रंथाचिया।।
हरी हरी भजन जनी जनार्दन। सर्वत्र समान भूतदया।। [14]

आज के वर्तमान युग में लोगों ने लालच, षिफारिष के खातिर अपना इमान तक बेच दिया। इसके कारण बुद्धी सत विचार नहीं कर पाती है ईश्वर को भी उसी में सम्मेलित कर लिया परंतु इससे अंतःकरण षुद्ध नहीं हो सकता है। संत तुकाराम ने कलियुग में अपना कोई नहीं इसका स्मरण करा दिया है-

"जन हे सुखाचे दिल्या घेतल्याचे।
अंत काळीचे कोणी नाही।।[15]

उक्त पंक्ति का आषय है कि समाज में आपना प्रिय और नजदिकी कोई नहीं है जब तक मनुश्य के पास पैसा है तब ही लोग गुंणगाण करते हैं। मनुश्य को एक बात नहीं भूलनी चाहिए उसके जब तब हाथ पैर चलते हैं तभी ही ठीक है बाद में किसी का कोई भरोसा नहीं लिया जाता। इसलिए समाज में सभी के आदर-सम्मान के व्यवहार कीजिए हमारे कर्म ही अच्छे होने चाहिए साथ कुछ नहीं आयेगा। संत नामदेव ने कलियुग के वर्णन करते हुए-

"नामाविण साधन नाही या कलियुगी।
व्यर्थ श्रम भोगी पाहता मते।। [16]

प्रस्तुत पंक्ति का आशय है कि कलियुग में पहले की अपेक्षा लोगों का मानस पटल की वैचारिक छवि में बहुत हद्द तक बदलाव आया है। मनुष्य रात-दिन श्रम कराकर भी उसका जीवन में सुख नहीं है। इसका प्रमुख साधन ही नामस्मरण से मन षांत हो जाता है। किसी अन्य के प्रति कोई बुरी भावना नहीं आती है तथा बुद्धी हमेशा गलत न होने का आभास देती है।

निश्कर्शः अंतः कहा जाय तो भक्तिकाल का समय उन टूटते हुए मूल्यों का बचाव एवं तत्कालीन समय में उपजे सामाजिक आराजकता एवं भेदभाव के समक्ष ही पुकार थी। भक्तकवि ने भगवान का सहारा लेकर समाज में व्याप्त बुराईया, पाखंड पर आघात कराकर जनता को सही दिषा देने का प्रयास किया है। इसलिए संत के कार्य की छवि आज किसी न किसी रुप में समाज पर दृष्टिगोचर होता रही है और उसकी महत्ता समय के साथ भी विद्यमान रहेगी परंतु विकृत बुद्धि के लोगों तथा स्वहित की प्रवृत्ति के धर्म में राजनीती स्थापित की जिससे ईश्वर एक व्यापार-सा बना है। मेरा व्यक्तिगत मानना है धर्म का रक्षण आत्मस्वरूप का तत्व मन रखकर कीजिए न कि दिखावा के लिए।

नामदेव का काव्य सद्भाव सहविष्णुता,समता का समन्वय साध्य करनेवाला दृष्टिकोण संत नामदेव ने अपने अभंग में सतत मुखरित किया है। संत नामदेव

Scanned by TapScanner

ने काव्यलेखन केवल करने हेतु ने अपनी काव्य शक्ति का उपयोग न कराकर अपने सहज उदगार के माध्यम होकर ही स्वीकार किया। इसलिए संत नामदेव के काव्य की भाषा सीधी-सरल शब्द के प्रभुत्व पर वत्सल, करुण, एवं अद्‌भुत रस सजहता से व्यक्त किया है।

सहायक ग्रंथ

1. रामकुमार वर्मा, हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, बनारस, वर्ष 1958
2. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, साहित्य का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, वर्ष 2009
3. श्री नामदेव (चरित्र, काव्य आणि कार्य) शासकीय मध्यवर्ती मुद्रणालय, मुंबई, पृ. सं 69
4. श्री नामदेव गाथा, महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि सांस्कृतिक मंडल, मुंबई, वर्ष 1970
5. पेंडसे,श.द.,महाराष्ट्राचा भागवत धर्म ज्ञानदेव आणि नामदेव, कॉन्टीनेन्टल प्रकाशन, पुणे, 1998
6. शिवाजीराव मोहिते, वारकरी संप्रदाय आणि संत साहित्य,कर्मवीर प्रकाशन, पुणे, 2008
7. श्रीपाल सबनीम,नामदेव-तुकारामांचे सांस्कृतिक संचित कैलास पब्लिकेशन, पुणे,
8. मराठी का भक्ति साहित्य आ. ना. देशपांडे, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणासी 1959
9. प्रो.नीलिमा मेहता, मध्ययुगीन मराठी वाङ्मयाचा इतिहास अभ्यास,
10. श्री ज्ञानेश्वरी,- संत ज्ञानेश्वर, पृ.सं. 500 अभंग सं. 778

संदर्भ

1. श्री नामदेव (चरित्र, काव्य आणि कार्य) शासकीय मध्यवर्ती मुद्रणालय, मुंबई,पृ.सं 69
2. मराठी का भक्ति साहित्य आ. ना. देशपांडे पृ.124
3. श्री नामदेव गाथा, शासकीय प्रत, पृ.सं. 8, 18 सं. 1494
4. श्री नामदेव गाथा, शासकीय प्रत, पृ.सं. 691 अभंग सं. 1778
5. श्री नामदेव गाथा, शासकीय प्रत, पृ.सं. 691 अभंग सं. 1779
6. वही, पृ. सं 691 अभंग सं. 2333
7. वही, पृ. सं 691 अभंग सं. 2213
8. प्रो.नीलिमा मेहता, मध्ययुगीन मराठी वाङ्मयाचा इतिहास अभ्यास, पृ.सं. 48
9. श्री ज्ञानेश्वरी,- संत ज्ञानेश्वर, पृ.सं. 500 अभंग सं. 778

Scanned by TapScanner